प्लेटो के साम्यवाद का स्वरूप

साम्यवाद की व्यवस्था का क्या स्वरूप हैं, इसे बहुत संक्षेप में यहाँ प्रस्तुत किया जाता है। यह केवल दार्शनिक शासक वर्ग तथा सैनिक वर्ग पर ही लागू होने वाली व्यवस्था हैं, यह उत्पादक वर्ग पर लागू नहीं होती। इसके अन्तर्गत शासकों की न तो निजी सम्पत्ति होगी और न ही उनके निजी कुटुंब होंगे। शासकों की सामूहिकता की इस जीवन-व्यवस्था को प्लेटो ने 'सम्पत्ति का साम्यवाद' (Community of property) तथा 'पत्नियों का साम्यवाद' (Community of wives) कहा हैं।

साम्यवाद के समर्थन में प्लेटो के तर्क
साम्यवाद के समर्थन में प्लेटो के तर्क निम्नलिखित हैं–

1. नैतिकतर्क

साम्यवाद व्यवस्था के समर्थन में प्लेटो का नैतिक तर्क यह है कि इसके द्वारा शासक को समाज की व्यापक व्यवस्था का एक अभिन्न अंग बनाया जाता है। हम जानते हैं कि प्लेटो व्यक्ति को स्वतंत्र एवं स्वार्थमयी इकाई नहीं मानता। व्यक्ति का महत्व केवल इसमें ही है कि वह व्यवस्था का अंग बना रहे एवं नियत स्थान पर बने रहकर नियत कार्य को कुशलतापूर्वक करें। जब प्रत्येक व्यक्ति अपने कार्य को सम्यक रूप से करेगा एवं दूसरों के कार्यों में स्वार्थभाव से हस्तक्षेप नहीं करेगा, तभी सामाजिक सदाचार की स्थापना होगी। ऐसे नैतिक जीवन की उपलब्धि के लिए प्लेटो संरक्षक वर्ग के लिए साम्यवादी व्यवस्था का प्रतिपादन करता हैं। सरांश यह हैं कि साम्यवाद समाज के नैतिक जीवन के लिए आवश्यक हैं।

2. मनोवैज्ञानिकतर्क

प्लेटो ने साम्यवाद के समर्थन में जो दूसरा तर्क प्रस्तुत किया है वह मनोवैज्ञानिक है। हम देख चुके है कि प्लेटो के आदर्श राज्य के दो वर्ग-शासक एवं सैनिक- आत्मा के विवेक एवं साहस तत्व का प्रतिनिधित्व करते हैं। 'विवेक' एवं 'साहस' को यदि निष्ठा और निःस्वार्थ भाव से कार्य करना है तो उनके लिए यह परमावश्यक है कि वे 'क्षुधा' के प्रलोभनों एवं प्रताड़नाओं से मुक्त रहे। दूसरे शब्दों में, दार्शनिक शासकों एवं सैनिकों को भौतिक वासनाओं से मुक्त रहना चाहिए: न्याय के लिए विवेक और साहस को वासना से मुक्त रहना चाहिए। केवल साम्यवाद द्वारा विवेक का शासन भौतिक प्रलोभनों से मुक्त रह सकता है। साम्यवाद की पुष्टि में प्लेटो का यही मनोवैज्ञानिक तर्क है कि दार्शनिक शासन हेतु 'विवेक' को 'वासना' तत्व से पूर्णतः मुक्त रखा जाये जिसमें कि निःस्वार्थ विवेक सामाजिक हित के कार्य में लग जाये: शासक को क्षुधा/वासना से पूर्णतः मुक्त रखा जाये जिससे कि निःस्वार्थ शासक सामाजिक हित के कार्य में जुट जाये।

3. व्यावहारिकतर्क

प्लेटो व्यावहारिक अथवा राजनीतिक आधार पर भी साम्यवाद को उचित मानता हैं। प्लेटो की यह दृढ़ धारणा है कि शासकों के हाथों में राजनीतिक और आर्थिक शक्तियों का केन्द्रीकरण नहीं होना चाहिए। राजनीतिक और आर्थिक शक्तियों का केन्द्रीकरण राजनीतिक जीवन की शुद्धता अथवा पवित्रता के लिए घातक सिद्ध होता है। इससे शासक वर्ग में भ्रष्टचारी एवं स्वार्थी मनोवृत्ति उत्पन्न होती हैं। जब शासकों का न तो कुटुंब होगा और न ही उनकी निजी सम्पत्ति होगी तब उन्हें पथ-भ्रष्ट करने वाली भ्रष्टाचारी मनोवृत्ति समूल नष्ट हो जायेगी जिससे शासक निःस्वार्थ भाव से सामाजिक हित के लिए समर्पित होकर कार्य कर सकेंगे।

4. दार्शनिकतर्क

प्लेटो ने दार्शनिक आधार पर भी साम्यवाद व्यवस्था को उचित माना है। साम्यवाद का सिद्धांत प्लेटो के कार्यों के विशेषीकरण के सिद्धांत पर आधारित हैं। उसकी यह धारणा है कि जिन लोगों के कंधों पर शासन का विशिष्ट दायित्व हैं उनका जीवन भी विशिष्ट शैली का होना चाहिए। उच्चादर्श की प्राप्ति के लिए समर्पित जीवन सांसारिक प्रलोभनों से मुक्त होना चाहिए। इसी दार्शनिक आधार पर प्लेटो ने दार्शनिक के लिए कुटुम्बहीन एवं सम्पत्तिहीन साम्यवादी जीवन शैली का प्रतिपादन किया हैं।